

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 11

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

एलिय्याह, सारपत की विधवा, और मुक्ति का इतिहास, 1 राजा 17

1 राजा का पाठ 17:7-24

ठीक है, आइए 1 किंग्स 17, श्लोक 7 से 24 पर चलते हैं। आइए इसे पढ़ें ताकि हमारे दिमाग में पाठ रहे। “कुछ समय बाद नाला सूख गया क्योंकि देश में बारिश नहीं हुई थी। तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि तुरन्त सीदोन के सारपत को जा, और वहीं रह। मैंने उस स्थान की एक विधवा को तुम्हें भोजन देने की आज्ञा दी है। इसलिये वह सारपत को गया। जब वह नगर के फाटक पर आया, तो एक विधवा लकड़ियाँ बीन रही थी। उसने उसे बुलाया और पूछा, 'क्या तुम मेरे लिए एक घड़े में थोड़ा पानी लाओगी ताकि मैं पी सकूँ?' जैसे ही वह उसे लेने जा रही थी, उसने पुकारा, 'और कृपया मेरे लिए रोटी का एक टुकड़ा लाओ।' 'तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ,' उसने उत्तर दिया, 'मेरे पास कोई रोटी नहीं है - केवल एक घड़े में मुट्ठी भर आटा और एक जग में थोड़ा सा तेल है। मैं घर ले जाने और अपने और अपने बेटे के लिए भोजन बनाने के लिए कुछ लकड़ियाँ इकट्ठा कर रहा हूँ, ताकि हम इसे खा सकें--और मर जाएं।' एलिय्याह ने उससे कहा, 'डरो मत। घर जाओ और जैसा तुमने कहा है वैसा ही करो। परन्तु पहले तुम्हारे पास जो कुछ है उसमें से मेरे लिए रोटी का एक छोटा सा केक बनाकर मेरे पास लाओ, और फिर अपने और अपने बेटे के लिए कुछ बनाना। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस दिन तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा, उस दिन तक मैदा का घड़ा सूख न जाएगा, और उस घड़े का तेल भी न सूखेगा। वह चली गई और एलिय्याह ने जैसा कहा था वैसा ही किया। इसलिये एलिय्याह, स्त्री और उसके परिवार के लिये प्रतिदिन भोजन था। क्योंकि यहोवा के उस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा था, उस घड़े का मैदा न चुका, और न उस कुप्पी का तेल सूखा।

“कुछ समय बाद उस महिला का बेटा, जो घर की मालिक थी, बीमार हो गया। उसकी हालत और भी खराब हो गई और अंततः उसने सांस लेना बंद कर दिया। उसने

एलिय्याह से कहा, हे परमेश्वर के भक्त, तुझे मुझ से क्या शिकायत है? क्या तुम मुझे मेरे पाप की याद दिलाने और मेरे बेटे को मारने आये हो?' एलिय्याह ने उत्तर दिया, 'मुझे अपना पुत्र दो।' वह उसे उसकी गोद से ले गया, उसे ऊपरी कमरे में ले गया जहाँ वह रह रहा था, और उसे अपने बिस्तर पर लिटा दिया। तब उस ने यहोवा की दोहाई दी, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ने इस विधवा के पुत्र को मरवाकर जिसके पास मैं रहता हूँ उस पर भी विपत्ति डाली है?' तब वह तीन बार लड़के के ऊपर लेट गया और यहोवा से प्रार्थना की, 'हे भगवान, मेरे भगवान, इस लड़के का जीवन उसे लौटा दो!' यहोवा ने एलिय्याह की दोहाई सुनी, और लड़के का प्राण लौट आया, और वह जीवित हो गया। एलिय्याह ने बच्चे को उठाया और कमरे से नीचे घर में ले गया। उस ने उसे उसकी माता को सौंपकर कहा, 'देख, तेरा पुत्र जीवित है!' तब स्त्री ने एलिय्याह से कहा, 'अब मैं जान गई हूँ कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है वह सत्य है।'" 2.

प्रतिस्थापन का सिद्धांत क्रियान्वित हुआ - 1 राजा 17:7- 24 ठीक है, 1 राजा 17:7 से 24; विषय है: "परिचालन में प्रतिस्थापन सेट का सिद्धांत।" हमने अभी 1 राजा 17:7 से 16 में जो पढ़ा है, उसका पहला भाग जहां एलिय्याह सारपत की विधवा के पास जाता है, यीशु द्वारा ल्यूक 4:25 और 26 में उद्धृत किया गया है जहां यीशु कहते हैं, "मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वहां थे एलिय्याह के समय में इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं, जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, और सारे देश में भयंकर अकाल पड़ा, तौभी एलिय्याह को उनमें से किसी के पास नहीं, परन्तु सीदोन के सारपत में एक विधवा के पास भेजा गया। एलीशा भविष्यवक्ता के समय में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, फिर भी उनमें से एक को भी शुद्ध नहीं किया गया: केवल सीरियाई नामान को।

अब जब यीशु ने इसे ल्यूक 4 में दर्ज किया है, तो वह इंगित करता है कि एलिय्याह के समय में जो हुआ वह फिर से होगा यदि परमेश्वर के लोग - इस्राएली - उसके संदेश को अस्वीकार करते हैं। यानी, प्रतिस्थापन का सिद्धांत फिर से उसी तरह लागू होगा जैसा एलिय्याह के समय में था। इसका मतलब यह है कि अन्यजातियों को उस वाचा के दायित्वों

और विशेषाधिकारों के लिए बुलाया जाएगा जिसे यहूदियों ने अस्वीकार कर दिया था। तो यह प्रतिस्थापन के सिद्धांत का विचार है: अन्यजातियों को उस वाचा के दायित्वों और विशेषाधिकारों के लिए बुलाया जाएगा जिसे यहूदी अस्वीकार करते हैं। यह एलिजा के समय में हुआ था, और यीशु संकेत देते हैं कि यह उनके समय में फिर से होगा यदि उनके द्वारा लाए गए संदेश को नहीं सुना गया।

3. एलिय्याह का केरीथ ब्रुक से ज़ेरेफथ में स्थानांतरण

अब, मैं उस सिद्धांत को 1 राजा 17:7 से 24 में, मेरे विचार से, तीन चीज़ों में देख सकता हूँ। पहला एलिय्याह के केरीथ नदी से ज़ेरेफथ में स्थानांतरण का महत्व है। हमने श्लोक 2 से 6 में देखा कि एलिय्याह का छिपना रहस्योद्घाटन का महत्व था। हमने जो देखा यह उसकी समीक्षा मात्र है। महत्व यह था कि भविष्यवक्ता के रूप में परमेश्वर का वचन इज़राइल से चला गया था। परमेश्वर अपने लोगों को अपने वचन के प्रशासन से अलग कर रहा था। तब परमेश्वर ने लोगों से स्वतंत्र रूप से एक भविष्यवक्ता को कायम रखा। इससे पता चला कि लोग परमेश्वर के वचन पर निर्भर थे और वचन लोगों पर निर्भर नहीं था। तब यहोवा ने स्वयं एलिय्याह की व्यवस्था की। इस तरह से उसके संरक्षण का मतलब था कि उसका काम खत्म नहीं हुआ था। हमने पहले इसी बारे में बात की थी। ताकि एलिय्याह का छिपना उन अर्थों में रहस्योद्घाटन का महत्व हो।

लेकिन अब परमेश्वर का वचन एलिय्याह के पास फिर से आता है, छंद 8 और 9, एक आदेश के साथ और उसे अपना स्थान केरीथ में अधिक छिपने से बदलकर ज़ेरेफथ में एक विधवा के घर में करने के लिए कहा गया है। यहोवा का यह वचन उस से आया, कि सीदोन के सारपत को जा और वहां रह, मैं ने उस स्थान में एक विधवा को तुझे भोजन देने की आज्ञा दी है।

एलिय्याह के जीवन की यह अवधि दो चरणों में विभाजित है। पहला, केरीथ के नाले का समय और दूसरा सारपत में विधवा के घर का समय। जब परमेश्वर अपना स्थान बदलने के लिए कहता है, तो महत्वपूर्ण बात यह है कि उसके वचन के प्रशासन के माध्यम से

परमेश्वर के कार्य करने का स्थान भी बदल जाता है। इस प्रकार प्रशासन के माध्यम से परमेश्वर के कार्य करने का स्थान भी बदल जाता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का वचन अब सारपत और सारपत में उस विधवा के घर तक जाने वाला है।

मुझे ऐसा लगता है कि यदि उपदेश में केवल एलिजा की परिस्थितियों और एलिजा की व्यक्तिगत जरूरतों पर विचार करने पर जोर दिया जाता है, तो आप उस बिंदु को पूरी तरह से भूल जाते हैं। आप यहां जो कुछ चल रहा है उसके महत्व को देखें जहां तक शब्द के प्रशासन की बात है: यह उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है।

अब, उससे थोड़ा आगे बढ़ें। एलियाह के ज़ेरेफ़थ जाने का महत्व सबसे पहले यह नहीं है कि जब नदी सूख गई तो भगवान ने उसकी देखभाल की और जब ऐसा हुआ तो उसने नए निर्देशों के लिए धैर्यपूर्वक और ईमानदारी से इंतजार किया। कभी-कभी इसी पर जोर दिया जाता है। यह सच हो सकता है कि उन्होंने धैर्यपूर्वक और ईमानदारी से नये निर्देशों का इंतजार किया। एलियाह अपने चरित्र गुणों और अपनी वफ़ादारी के मामले में हमारे लिए एक उदाहरण हो सकता है, लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ शामिल है।

यदि संदेश केवल यह है कि जब नदी सूख गई तो भगवान ने एलियाह की देखभाल की, तो आप जो कर रहे हैं वह जलधारा में पानी के प्रवाह के लिए सारफत जाने की भगवान की आज्ञा का पालन कर रहा है। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि धारा में पानी का बहाव एलिजा के प्रस्थान का कारण बना, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि यही कारण है जो इसकी व्याख्या करता है। परमेश्वर एलियाह के लिए अन्य तरीकों से प्रावधान कर सकता था। इसलिए जो महत्वपूर्ण है वह केवल एलियाह की परिस्थितियाँ नहीं है, बल्कि परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के संदर्भ में स्थान में परिवर्तन भी है।

एलियाह पर एफबी मेयर की किताब एलिजा की परिस्थितियों को देखने का विचार अक्सर वहीं होता है जहां आप पाएंगे कि प्रचारक ध्यान केंद्रित करेंगे। उदाहरण के लिए, एक टिप्पणीकार इस कथा के बारे में कहता है; यह एफबी मेयर है। एफबी मेयर के पास एलिजा पर एक छोटी सी किताब है। वह कहते हैं, "हृदय थाम लो तुम लोग जो लगातार चलते रहने

के लिए मजबूर हैं। आज रात तंबू गाड़ने के लिए हिलते बादलों और तुरही की आवाज से कल तंबू गाड़ने का आह्वान किया जाएगा। यह सब बुद्धिमान और वफादार प्रेम के निर्देशन में है, जो आपको शानदार नियति के लिए शिक्षित कर रहा है। केवल इस बात पर विश्वास करें कि आपकी परिस्थितियाँ आपके चरित्र के विकास के लिए सबसे उपयुक्त हैं। उन्हें घटनाओं और स्थितियों के सभी संभावित संयोजनों में से चुना गया है ताकि आपमें उपयोगिता और सुंदरता को उच्चतम स्तर तक पहुंचाया जा सके। यदि सर्वज्ञ ज्ञान की सभी विस्तृत श्रृंखला आपकी पहुंच में होती तो वे आपके द्वारा चुने गए होते। वह एलिय्याह पर मायर की पुस्तक का पृष्ठ 29 है।

हालाँकि यह सब सच हो सकता है, मुझे लगता है कि यहाँ एलिय्याह के स्वयं के जीवन और परिस्थितियों के उदाहरण के अलावा और भी बहुत कुछ देखने को है। निस्संदेह, जब नाला सूख गया, तो यह एलिय्याह के विश्वास की परीक्षा थी। मैं इसके खिलाफ़ बहस नहीं करूँगा, लेकिन अभी और भी बहुत कुछ चल रहा है। सबसे पहले इसका महत्व केवल यह नहीं है कि जब नदी सूख गई तो परमेश्वर ने उसकी देखभाल की और वह निर्देश की प्रतीक्षा कर रहा था।

इस सुझाव में भी महत्व नहीं पाया जा सकता है कि ज़ेरेफथ की विशेष विधवा, जिसके पास वह गया था, चरित्र और धर्मपरायणता के ऐसे गुणों वाली थी कि वह इज़राइल और अन्य जगहों की सभी विधवाओं से ऊपर एलिय्याह से मिलने की हकदार थी। मेयर कहते हैं, मैं उद्धृत करता हूँ, "उसमें कुछ ऐसा रहा होगा जो इज़राइल की भूमि की कई विधवाओं में नहीं पाया जा सका। यह कोई मनमाना कारण नहीं था कि भगवान ने उन्हें पार कर लिया और इतनी दूर चले गए। उसके पास चरित्र के गुण, बेहतर धन्यवाद के धागे, वीरता और विश्वास की चिंगारी होनी चाहिए, जिसने उसे सभी दुखदायी भाईचारे से अलग किया और उसे पैगम्बर की बोहेमियन परिचारिका और अपने पिता के इनाम में उसकी खुशी से वाहक बना दिया।

अब, मुझे फिर लगता है कि वहां सच्चाई का कुछ अंश है। निश्चित रूप से एक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन की लालसा रखता है, सच्चे परमेश्वर की सेवा और सम्मान करने

की इच्छा रखता है, मुझे लगता है कि उसकी वह लालसा संतुष्ट होगी। मैं सोचता हूँ कि प्रभु इसका सम्मान करेंगे। लेकिन इस कथा में मुझे लगता है कि हमें जो देखना है वह एक संप्रभु ईश्वर का कार्य है जो कहता है, "देख, मैंने वहाँ एक विधवा को तेरा भरण-पोषण करने की आज्ञा दी है।" तनाव इस बात पर नहीं है कि एलिय्याह के आने से पहले महिला क्या थी, बल्कि तनाव इस बात पर है कि उसे क्या करना था और उसने एलिय्याह के अनुरोध का पालन करते हुए और प्रभु का वचन सुनने की प्रतिक्रिया में क्या किया।

यह दूसरी बार है जब एलिय्याह को उसके स्थान के संबंध में कोई आदेश दिया गया है। पहला पद 3 और 4 में केरिथ जाने और वहाँ छिपने का है। "और यहोवा ने कहा, मैं ने कौवोंको तुम्हें वहाँ चराने की आज्ञा दी है।" जब आप श्लोक 8 और 9 पर जाएं तो प्रभु कहते हैं कि सारपत की विधवा के पास जाओ, "मैंने एक विधवा को तुम्हें भोजन देने की आज्ञा दी है।" अब यह सच है कि कौवे को आदेश देने और महिला को आदेश देने में अंतर है। परन्तु जब विधवा आज्ञा मानती है; इस प्रकार, उसकी प्रतिक्रिया का वास्तविक आधार महिला के अंतर्निहित गुणों में नहीं पाया जाता है, बल्कि यह ईश्वर की कृपा है जो उसके जीवन में काम कर रही है। हां, उनका मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश अपनी विशेषताओं में मानवकेंद्रित के बजाय धर्मकेंद्रित है। अब इसे चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है। लेकिन आम तौर पर आप इसे दूसरे तरीके से चरम पाते हैं - मानवकेंद्रित दिशा।

एक और चीज़ है जो यहाँ चलन में आती है। मानवकेंद्रित उपदेश को उसकी प्रकृति के कारण ही लागू करना आसान है। थियोसेंट्रिक को लागू करना आसान नहीं है। संदेश वह अनुप्रयोग है जो ईश्वर की महिमा करता है। आपको यह पता चलता है कि ईश्वर कौन है जो उसकी पूजा और स्तुति करने पर प्रतिक्रिया देता है। लेकिन आप देखते हैं कि मानवकेंद्रित उपदेश के साथ आवेदन करना बहुत आसान है।

किसी भी मामले में, इस पर वापस जाने के लिए, एलिय्याह को, परमेश्वर के वचन के वाहक के रूप में, कायम रखा जाना चाहिए, और अब इसराइल के स्थान पर एक बुतपरस्त महिला को ऐसा करने के लिए चुना गया है। कुछ समय के लिए उसे सीधे भगवान के हाथ से कौवों और नाले के माध्यम से बनाए रखा गया था, लेकिन अब, जब भगवान एक मानव

उपकरण चुनता है, तो वह इज़राइल से बाहर चला जाता है। वह जानबूझकर अपने ही लोगों को दरकिनार करते हैं।' एलिय्याह के केरिथ से ज़ेरेफ़थ में स्थानांतरण में प्रतिस्थापन का यही सिद्धांत लागू हुआ। इसलिए एलिय्याह के कदम के महत्व को केवल एलिय्याह के लिए परमेश्वर की देखभाल के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए; इसे इस विशेष विधवा के गुणों में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह है कि भगवान उसे ज़ेरेफ़थ में एक विशेष विधवा के पास जाने के लिए कहते हैं - ज़ेरेफ़थ को रेखांकित करें! ध्यान दें कि पाठ क्या कहता है, श्लोक 9, सीदोन के सारफ़त को जाओ और वहां रहो। सारफ़त सीदोन का था। सीदोन वह नगर था जहाँ से ईज़ेबेल आई थी। 1 राजा 16: 31: अहाब ने सीदोनियों के राजा एथबाल की बेटी इज़ेबेल से विवाह किया। ईज़ेबेल के पिता सीदोन में शासन करते थे। इसलिए एलिय्याह को उसी स्थान पर जाने के लिए कहा गया जहां से इसराइल में ख़तरा पैदा हुआ था। एलिय्याह के दिनों में सीदोन वही था जो मुक्ति के रहस्योद्घाटन के इतिहास में अन्य समय में मिस्र, बेबीलोन या रोम था: सच्चे विश्वास के विरोध का केंद्र। सिडोन ने उस विशेष समय में परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच विरोधाभास को मूर्त रूप दिया। परन्तु परमेश्वर कहता है, कि सीदोन को जाओ; दुश्मन के दिल में जाओ; शैतान के राज्य के बीच में रहो, क्योंकि मैं ने वहां अपने वचन के लिथे एक स्थान तैयार किया है। देखिए यही हो रहा है।

विधवा को दिया गया वादा तो यहोवा जो कह रहा है वह यह है: मैंने वह कार्य, जो इस्राएल का होना चाहिए, सारपत की इस विधवा को सौंप दिया है। तो आप केरिथ से ज़ेरेफ़थ तक स्थानांतरण में महत्व में सबसे पहले प्रतिस्थापन के सिद्धांत को संचालन में देखते हैं। दूसरा, आप इसे विधवा को दिए गए आदेश और वादे के महत्व में देखते हैं। विधवा का बुरा हाल है. सूखा इसराइल की सीमाओं से परे चला गया था. यह भी एक दिलचस्प विचार है , जहां भगवान के लोगों की अवज्ञा न केवल उन्हें प्रभावित करती है, बल्कि अन्य लोगों को भी प्रभावित करती है। सूखा इसराइल की सीमाओं से परे चला गया था.

विधवा के पास कुछ भी नहीं बचा था; वह अपने बेटे के साथ मरने को तैयार है। लेकिन एलिय्याह क्या करता है? श्लोक 10 और निम्नलिखित: “वह सारपत को गया, और जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो एक विधवा लकड़ी बीन रही थी। उसने उसे बुलाया और पूछा, 'क्या तुम मेरे लिए एक जार में थोड़ा पानी लाओगी ताकि मैं पी सकूं।' जब वह उसे लेने जा रही थी तो उसने बुलाया और कहा, 'और कृपया मेरे लिए रोटी का एक टुकड़ा लाओ।' 'निश्चय तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, मेरे पास रोटी नहीं है; केवल एक घड़े में मुट्ठी भर आटा, और एक कुप्पी में थोड़ा सा तेल है। मैं घर ले जाने और अपने और अपने बेटे के लिए भोजन बनाने के लिए कुछ लकड़ियां इकट्ठा कर रहा हूं ताकि हम इसे खा सकें और मर सकें।' तो एलिय्याह आता है और पूछता है, वह पद 13 था, मुझे आगे बढ़ना चाहिए था। “उसने उससे कहा, 'डरो मत; घर जाओ और जैसा तुमने कहा है वैसा ही करो, लेकिन पहले तुम्हारे पास जो कुछ है उसमें से मेरे लिए रोटी का एक छोटा सा केक बनाकर मेरे पास लाओ, और फिर अपने और अपने बेटे के लिए कुछ बनाओ।" इसलिए उसने उससे आखिरी भोजन मांगा। . और वह उस पर कायम है. वह सचमुच वह सब कुछ मांग रहा है जो उसके पास है।

नकल से आगे मुक्ति के इतिहास की ओर जा रहे हैं अब, मुझे लगता है कि यहां हम स्पष्ट रूप से केवल एक आस्तिक और ईश्वर के सेवक के साथ काम नहीं कर रहे हैं जिसका व्यवहार हमें नकल के लिए एक उदाहरण के रूप में दिया गया है। क्या हममें से कोई किसी से हमारी ज़रूरतों के लिए उसके पास जो कुछ है उसमें से आखिरी चीज़ हमें देने के लिए कहता है? एलिय्याह में आप जो देख रहे हैं वह एक निश्चित समय और स्थिति में ईश्वर के पैगंबर का कार्य है जो न केवल अपनी ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है, बल्कि वह ईश्वर का वचन भी बोल रहा है। परमेश्वर का वचन, जब यह यहां या पवित्रशास्त्र में कहीं भी हमारे पास आता है, तो यह किसी व्यक्ति के पूरे जीवन और उस व्यक्ति की सभी चीज़ों की मांग करता है। और परमेश्वर का वचन यहाँ इस महिला के साथ यही करता है। यह वह सब मांगती है जो उसके पास है। यह वास्तव में कोई नया विचार नहीं है. यह वही माँग है जो

परमेश्वर ने इस्राएल से की थी। जहां तक इज़राइल का संबंध है, मांग पूरी है या कुछ भी नहीं है।

व्यवस्थाविवरण 26 पर वापस जाएँ जहाँ आपके पास पहला फल प्रभु के लिए लाने के नियम हैं। जैसे ही इज़राइल ने ऐसा किया, उसने कबूल किया कि उनके पास जो कुछ भी था वह प्रभु का था, लेकिन इज़राइल यह भूल गया, प्रभु से दूर हो गया, और अब आप देखते हैं कि सारपत की इस विधवा को सब कुछ या कुछ भी नहीं दिया जा रहा है। परमेश्वर के वचन के वाहक का भरण-पोषण करने का कार्य भी उसे दिया गया है।

लेकिन ध्यान देने वाली बात यह भी है कि मांग एक ही समय में एक विशेषाधिकार है क्योंकि यह किसी वादे के अलावा नहीं दी जाती है। श्लोक 14: "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जिस दिन तक यहोवा भूमि पर वर्षा न बरसाए, उस दिन तक उस घड़े का आटा सूख न जाएगा, और उस घड़े का तेल भी न सूखेगा।" मांग एक ही समय में एक विशेषाधिकार है क्योंकि मांग एक वादे से अलग नहीं की जाती है। मेयर इसे इस प्रकार कहते हैं, "प्रभु उसके पास जो कुछ भी है वह देता है, लेकिन वह जो कुछ देता है वह सब मांगता है।" इसलिए हम कथा में जो देखते हैं वह भोजन और तेल की आपूर्ति का कोई सामान्य वादा नहीं है जो हर समय के लिए मान्य हो। और मुझे नहीं लगता कि इस कहानी से हमारे पास यह सोचने का कोई आधार है कि इस कहानी में जो चमत्कार हम पाते हैं वह जरूरत की सभी स्थितियों में दोहराया जाएगा। लेकिन हमें जो देखना है वह यह है कि वाचा की मांग और वाचा का वादा इस विधर्मी महिला के जीवन में आ गया है। जैसे ही एलिय्याह इस महिला के लिए परमेश्वर का वचन लाता है, वाचा की मांग और वाचा का वादा इस बुतपरस्त महिला के जीवन में आ गया है।

लेकिन यह भी ध्यान दें कि वाचा का आशीर्वाद उसके विश्वास और आज्ञाकारिता से आता है। आप इस महिला के विश्वास से आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकते। वह जाती है और वही करती है जो एलियाह कहता है। तो जैसे ही प्रभु का वचन उसके पास आया, और उसे या तो विश्वास या अविश्वास में प्रतिक्रिया करनी पड़ी। पद 15 में आपने जो पढ़ा वह यह है कि "वह चली गई और वही किया जो एलिय्याह ने उससे कहा था। इसलिये एलिय्याह और

स्त्री और उसके परिवार के लिये प्रतिदिन भोजन था। क्योंकि यहोवा के उस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा था, उस घड़े का आटा न तो चुका, और न उस कुप्पी का तेल सूखा। इसलिए हम एलिय्याह के केरीथ से ज़ेरेफथ में स्थानांतरण में महत्व और विधवा को दी गई मांग और वादे में महत्व में प्रतिस्थापन के सिद्धांत को देखते हैं।

उपदेश देते समय विधवा के पुत्र की मृत्यु

तीसरा, विधवा के घर में एलिय्याह की भविष्यवाणी सेवकाई का महत्व है। यह आखिरी खंड है, 17 से 24, जहां बेटा बीमार हो जाता है और मर जाता है। जब आप उसे पढ़ेंगे, तो आप फिर से पूछ सकते हैं कि आप उस प्रकार की कथा पर कैसे उपदेश देते हैं? क्या यह मुख्य रूप से उदाहरणात्मक या अनुकरणीय होने के लिए दिया गया है? क्या हम कहानी में लोगों के जीवन और कार्यों से प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक और नैतिक सबक की आशा करते हैं? अक्सर इसके साथ इसी तरह व्यवहार किया जाता है।

उदाहरण के लिए, मैंने इसका एक विवरण पढ़ा जिसमें इस शीर्षक के अंतर्गत श्लोक 17 से 24 पर चर्चा की गई है: "गृहस्थ जीवन की परीक्षा, और सीखने योग्य बातें।" चार बिंदु: एक, संतोष. व्याख्याकार कहता है, "समूह, हम पूरी तरह से निराश्रित हो सकते हैं; हमारी पेंटी नंगी; हमारा पैसा खत्म हो गया; और हमारी आजीविका का साधन चला गया। लेकिन हमारे पिता के पास पर्याप्त संसाधन हैं। हजार पहाड़ियों पर मवेशी; उस ने हमारी आवश्यकता के लिये भोजन तैयार किया है; जब तक हम उस पर भरोसा करते हैं, वह इसे समय पर वितरित करेगा। हो सकता है कि आज बैरल का निचला हिस्सा खुरच दिया गया हो, लेकिन कल कल की जरूरतों के लिए पर्याप्त होगा। चिंता आपको अच्छा नहीं करेगी, लेकिन विश्वास के लिए प्रार्थना करेगी।" तो, संतोष.

दूसरा है: उकसावे के तहत सज्जनता. विधवा ने अपने संकट में उस आदमी से बिना सोचे-समझे और क्रूरता से बात की, जो उसके घर में मुक्ति लेकर आया था। "क्या आप मेरे पापों को याद दिलाने और मेरे बेटे को मारने आए हैं।" इस अनुचित और अन्यायपूर्ण

टिप्पणी से भविष्यवक्ता स्तब्ध रह गया होगा और उसे कड़वा उत्तर मिला होगा, लेकिन एलिय्याह ने बस इतना कहा, "मुझे अपना बेटा दे दो।" सबक: हमें इस व्यावहारिक ईश्वरभक्ति, उकसावे में नम्रता की अधिक आवश्यकता है।

तीसरा, पवित्र प्रकाश की शक्ति। इस महिला की जिंदगी में कहीं न कहीं एक ऐसा काला काम हुआ जिसने गलत काम की उसकी सारी यादों को बौना कर दिया। इससे उसके मन में गहरी पीड़ा भर गई और वह अब आगे बढ़ गई। पाठ: यदि किसी के पास किसी छुपे हुए लेकिन क्षमा न किए गए पाप का विवेक है, तो उसे बता दें कि भूलने के सभी प्रयास एक दिन व्यर्थ हो जाएंगे; बीमारी आ सकती है, या शोक, या कड़वा नुकसान हो सकता है। तब वह पाप भयावहता और पीड़ा में उभरेगा। अब उसने श्लोक 18 में कहा, "क्या तुम मुझे मेरे पाप की याद दिलाने आये हो" तो पवित्र प्रकाश की शक्ति।

और चौथा, जीवन देने का रहस्य। यह उन लोगों की विशेषता है जो पवित्र आत्मा को लेकर चल रहे हैं: कि वे हर जगह जीवन की आत्मा, यहां तक कि पुनरुत्थान जीवन को भी अपने साथ लेकर चलते हैं। हम न केवल मनुष्यों को पाप के प्रति आश्चस्त करेंगे, बल्कि हम ऐसे माध्यम भी बनेंगे जिनके माध्यम से दिव्य प्रकाश उनमें प्रवेश कर सके; भविष्यवक्ता के साथ भी ऐसा ही था। आप देखिए वहां क्या होता है: प्रकाश देने का रहस्य वह आध्यात्मिक पुनरुत्थान है जब एलिजा ने बेटे को उठाया। यह सभी विश्वासियों को आध्यात्मिक बनाना और शक्ति को लागू करना है।

अब फिर, इन सभी बिंदुओं में संतोष, उकसावे के तहत सौम्यता, पवित्र जीवन की शक्ति, प्रकाश देने का रहस्य, इस मार्ग को इस तरह से समझाने में कुछ सच्चाई है जिसका कुछ मूल्य है। लेकिन मुझे लगता है कि आपको यह पूछना होगा: क्या इस परिच्छेद में जो कुछ भी है, क्या सभी दृष्टांत इस प्रकार के उदाहरण हैं? क्या यह अनुच्छेद आपसे यही कह रहा है? हमें इस प्रकार के उदाहरण देने के लिए, आप देखें कि आप क्या कर रहे हैं यदि आप कहते हैं कि इस कहानी का अर्थ यह है कि आप इस पाठ का प्रचार नहीं कर रहे हैं; आप किसी अन्य पाठ का प्रचार कर रहे हैं और इस पाठ को कुछ सत्य के उदाहरण के रूप में उपयोग कर रहे हैं।

मैं इस पर वापस आना चाहता हूँ. यदि यहीं सब कुछ नहीं है, और हम प्रश्न पूछते हैं: मुक्तिबोध इतिहास के आंदोलन के संदर्भ में क्या हो रहा है? इस परिच्छेद में मुक्ति के रहस्योद्घाटन की प्रगति में क्या प्रगति देखी जा सकती है? मुझे लगता है कि जब हम इसे पढ़ेंगे तो हम कह सकते हैं कि लड़के की मौत एलिय्याह और विधवा दोनों के लिए एक सदमा थी। यदि आप विधवा के बारे में एक मिनट भी सोचें, तो यहां उसने विश्वास और आज्ञाकारिता में उत्तर दिया था। वह तब सुरक्षित और सुरक्षित रूप से रह रही थी और आटा और तेल भगवान की शक्ति का प्रमाण थे। वे उस वादे की पूर्ति के प्रमाण थे जो परमेश्वर ने एलिय्याह के माध्यम से उसे दिया था कि उसे कायम रखा जाएगा। निःसंदेह, उस शहर और अन्य जगहों पर अन्य लोग भी बड़ी कठिनाई में थे, लेकिन वह और उसका बेटा सुरक्षित और जीवित थे।

भगवान ने लड़के की जान क्यों ली? -- उसका पाप? लेकिन फिर उसके बेटे की अचानक मृत्यु एक जटिल समस्या पेश करती है, और विधवा और एलिय्याह के लिए भी यही स्थिति प्रतीत होती है। भगवान ने लड़के की जान क्यों ली? वह विशेष लड़का क्यों? ध्यान दें एलिय्याह या विधवा को संदेह नहीं है कि प्रभु ने यह किया। पद 18 को देखो; विधवा ने एलिय्याह से कहा, तुझे मुझ से क्या शिकायत है? परमेश्वर के जन, क्या तुम मुझे मेरे पापों की याद दिलाने और मेरे बेटे को मारने आए हो? वह अपने बेटे की मौत को अपने घर में एलिय्याह की उपस्थिति से जोड़ती है। एलिय्याह प्रभु के वचन का वाहक है। और पद 20 एलिय्याह के साथ, "उसने यहोवा से चिल्लाकर कहा, 'हे मेरे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ने इस विधवा पर, जिसके साथ मैं रहता हूँ, उसके पुत्र को मरवाकर विपत्ति डाली है?'" विधवा और एलिय्याह दोनों ही प्रभु को महसूस करते हैं लड़के की जान ले ली. सवाल यह है कि क्यों.

विधवा का उत्तर था कि प्रभु उसे उसके पाप के लिए दण्ड दे रहे हैं। उसने महसूस किया कि एलिय्याह की उपस्थिति के कारण उसका पाप प्रभु के ध्यान में लाया गया था। "क्या तुम मुझे मेरे पाप की याद दिलाने और मेरे बेटे को मारने आए हो," उसने एलिय्याह से कहा। शायद उसने सोचा कि इस्राएल के लोगों पर प्रभु का न्याय इस्राएल की सीमाओं से

आगे निकल गया था; और जैसे उसने उनका न्याय किया था, वैसे ही वह उसका भी न्याय कर रहा था। जैसे परमेश्वर का वचन इस्राएल के पास आया था, अब वह उसके पास भी आया और न्याय आया। शायद उसे परमेश्वर की पवित्रता का कुछ एहसास होता है, कि परमेश्वर भस्म करने वाली आग है और बुराई का न्याय करता है। लेकिन वह इन सबका दोष एलिय्याह पर लगाती है, और कहती है कि वही इसका कारण है। उसने सोचा कि एलिय्याह ने उसके पाप को परमेश्वर के ध्यान में लाया है। “हे परमेश्वर के जन, तुझे मुझसे क्या शिकायत है?” उसे ठगा हुआ महसूस हुआ। एलिय्याह ने जीवन का वादा किया था, लेकिन अब उसकी मृत्यु हो गई है। उसे आज्ञाकारिता के लिए आशीर्वाद देने का वादा किया गया था, लेकिन अब उसे अवज्ञा के लिए सज़ा मिल रही है। तो विधवा के इस सवाल का जवाब कि वह ऐसा क्यों महसूस करती है कि उसे ठगा गया है।

एलिय्याह उस विधवा की सेवा करता है जिसने उसे खाना खिलाया था लेकिन एलिय्याह भी उस प्रश्न का उत्तर चाहता है, और जब महिला अपनी भावनाओं को व्यक्त करती है तो वह वास्तव में उसे उत्तर नहीं देता है। देखिए, वह पद 18 है जहां वह कहती है, “तुम्हें मुझसे क्या विरोध है? क्या तुम मुझे मेरे पाप की याद दिलाने आये हो?” उनका जवाब बस इतना है, “मुझे अपना बेटा दे दो।” वह सीधे उत्तर नहीं देता। परन्तु वह लड़के को अपने कमरे में ले जाता है और अकेले में विधवा के स्वर में प्रार्थना करता है, मानो प्रभु से कह रहा हो, यह विधवा क्यों और यह लड़का क्यों? वह यहोवा को पुकारता है, “हे यहोवा, हे मेरे परमेश्वर; क्या तू ने इस विधवा के पुत्र को मरवाकर जिसके साथ मैं रहता हूँ, उस पर भी विपत्ति डाली है?” यहाँ आज्ञाकारिता थी, फिर भी न्याय था; सेवा का जीवन, फिर भी मृत्यु; भरण-पोषण का वादा, फिर भी लड़का मर गया।

लेकिन एलिय्याह यहीं नहीं रुकता, और यही महत्वपूर्ण बिंदु है। इस घटना के माध्यम से एलिजा के भविष्यवाणी मंत्रालय को बुतपरस्त विधवा की सेवा में लाया गया है। अब यहाँ मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य है: इस घटना के माध्यम से एलिय्याह के भविष्यसूचक मंत्रालय को बुतपरस्त विधवा की सेवा में लाया गया है क्योंकि अब, भगवान के

भविष्यवक्ता के रूप में, वह उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है। मुक्तिदायी इतिहास में प्रगति हुई है। यह प्रतिस्थापन और संचालन के सिद्धांत की एक और अभिव्यक्ति है। बच्चे की मृत्यु एलिय्याह को उस स्थान पर लाती है जहाँ उसे विधवा की सेवा करनी होती है। उसे विधवा की सेवा में अपने भविष्यसूचक कार्य में कार्य करना चाहिए। विधवा अब आकर्षण का केंद्र है। एलिय्याह के माध्यम से, प्रभु हस्तक्षेप करते हैं और उससे बात करते हैं और उसके जीवन में हस्तक्षेप करते हैं। पहले एलिय्याह कथा में फोकस का केंद्र था। यह वह विधवा थी जो एलिय्याह की सेवा करती थी; यह विधवा ही थी जिसने उसका भरण-पोषण किया और उसका भरण-पोषण किया; भोजन और तेल मुख्य रूप से एलिय्याह को सहारा देने के लिए दिया गया था। विधवा ने उस प्रावधान के लाभ में हिस्सा लिया, लेकिन एलीजा फोकस का केंद्र था। लेकिन अब, लड़के की मृत्यु के माध्यम से, एलिय्याह विधवा की सेवा करते हुए, प्रभु सीधे विधवा के जीवन में पहुँचते हैं।

लड़के को वापस जीवन में लाया गया अंतिम परिणाम श्लोक 24 में देखा जाता है जब लड़के को वापस जीवन में लाया जाता है। तब विधवा एलिय्याह से कहती है। “अब मैं जानता हूँ कि तुम यहोवा के भक्त हो, और तुम्हारे मुँह से निकला हुआ यहोवा का वचन सत्य है।” देखिए, यह परिणाम है: एलिय्याह ने विधवा की सेवा करते हुए स्वीकार किया कि प्रभु का वचन सत्य है। तो इस कठिन और हैरान करने वाले अनुभव के माध्यम से विधवा को परमेश्वर के वचन की सच्चाई और विश्वसनीयता के बारे में स्वीकारोक्ति के लिए लाया जाता है।

तो बेटे की मौत के सदमे ने दो काम किये. सबसे पहले, यह महिला में कमजोरी को दर्शाता है। वह परमेश्वर के वादे से पूरी तरह आश्वस्त नहीं थी। वह पूरी तरह से परमेश्वर के वचन द्वारा शासित नहीं थी। और जब संकट आया तो पहले तो उसने सही प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने एलिय्याह और उसके परमेश्वर पर अविश्वास किया। उसे एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा। यह परमेश्वर के वादों और उसके कार्यों के बीच स्पष्ट विरोधाभास का समय था। और जब ऐसा हुआ, तो उसे उसकी बात पर भरोसा नहीं रहा। याद रखें,

इब्राहीम की भी ऐसी ही स्थिति थी। वादा करो, और फिर इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा के लिए भगवान कहते हैं, "अपने बेटे को मार डालो"। यह एक ऐसी ही चीज़ है। तो बेटे की मौत के सदमे ने दो काम किये। इसने महिला में एक कमज़ोरी दिखाई: वह परमेश्वर के वादे के प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं थी। दूसरा, इसने एलिय्याह को परमेश्वर के वचन की पुष्टि के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया। एलिय्याह परमेश्वर के पास आया और विधवा से परमेश्वर के वादे के आधार पर प्रार्थना में कुशती लड़ी। वह जानता था कि परमेश्वर के वचन की पुष्टि होनी चाहिए, और उसने केवल एक ही रास्ता देखा - लड़के को मृतकों में से जीवित करना।

धर्मग्रंथ में पहला पुनरुत्थान और इसलिए श्लोक 21 में उन्होंने कहा, "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, इस लड़के का जीवन उसे लौटा दे।" मुझे लगता है कि यह संभवतः विधवा और उसके बेटे के लिए भरण-पोषण का वादा है, श्लोक 14, उस प्रार्थना का आधार था। परिणाम यह हुआ कि धर्मग्रंथ में पहली बार हमने मृत्यु से पुनरुत्थान के बारे में पढ़ा। और ध्यान दें कि वह अद्भुत घटना इस्राएल में नहीं, बल्कि सीदोन के सारपत में एक अन्यजाति दुनिया के दिल में घटी थी। एलिय्याह के मंत्रालय के माध्यम से प्रभाव स्पष्ट है: प्रभु ने स्वयं को सर्वशक्तिमान ईश्वर चुना; वही मारता और जिलाता है। वह वह है जो पवित्र तो है परन्तु दयालु है; वह वही है जिसका वचन सच्चा है और जिस पर लोग भरोसा कर सकते हैं। वह समृद्ध रहस्योद्घाटन ज़ेरेफ़थ की इस विधवा को कथा के माध्यम से दिया गया है।

प्रतिस्थापन के सिद्धांत को क्रियान्वित करने के सिद्धांत को एलिय्याह के केरीथ से ज़ेरेफ़थ में शत्रु क्षेत्र के मध्य में स्थानांतरित होने के महत्व, विधवा को दिए गए आदेश और वादे के महत्व और भविष्यवाणी मंत्रालय के महत्व में देखा जा सकता है। विधवा के जीवन में एलिय्याह के बारे में। मैंने सोचा कि इस विधि के चित्रण के माध्यम से यह समय के लायक होगा और हमें ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा।

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया